ऐसी हो संपादन कला की शिक्षा...

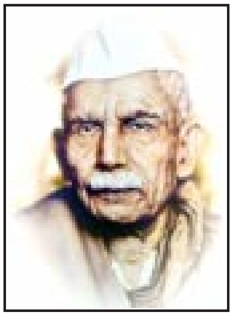

माखनलाल चतुर्वेदी

सज्जनों! समाचार-पत्र सम्पादन-कला की शिक्षा का, इस देश में कहीं समुचित प्रबंध नहीं है। अभी कुछ दिन हुए, मुंबई-विश्वविद्यालय ने इस दिशा में कुछ उद्योग करना चाहा था, किंतु आखिर कुछ नहीं हुआ। देश के तरुणों को सम्पादन-कला की शिक्षा देने के पथ में हमें भारत-व्यापी संगठन का चन्द्र खिलौना मिलने तक नहीं ठहरना चाहिए। यह संतोष की बात है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं में एक विषय पत्र-सम्पादन भी है, किन्तु उस परीक्षा में पास होने वाले तरुणों का, पत्रों के कार्यालय में जब वे नियुक्त किये जाते हैं, कोई काम का उपयोग नहीं हो पाता। केवल परीक्षा से ही सम्पादक निपजेंगे भी नहीं। हिन्दी समाचार-पत्रों के कार्यालयों में योग्य व्यक्तियों के प्रवेश कराने के लिए, पाठशाला - आजकल के नये नामों की बाढ़ में से कोई शब्द चुनिए तो कहिए एक सम्पादन-कला के विद्यापीठ की आवश्यकता है। ऐसा विद्यापीठ किसी योग्य स्थान पर बुद्धिमान, परिश्रमी, अनुभवी सम्पादक शिक्षकों द्वारा संचालित होना चाहिए - उक्त पीठ में अन्यान्य विषयों का एक प्रकाण्ड ग्रन्थ-संग्रहालय होना चाहिए। वहाँ सरकारी-गैरसरकारी रिपोर्ट, प्रस्ताव आदि की व्यवस्थाबद्ध फाइलें होनी चाहिए। पीठ की तालीम में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और साहित्य के परस्परावलम्बी ज्ञान के रूप में पत्र-संचालन की विविध शाखाओं का समावेश होना चाहिए। वहाँ बताया जाना चाहिए कि प्रत्येक विषय का अभ्यास कैसे किया जाए, साधन-सामग्री कैसे जुटायी जाय और उसका किस तरह उपयोग किया जाए, एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किन-किन पद्धतियों से किये जायें, घटनाओं को काव्य, कहानी कुतूहल, गंभीरता, विरोध, समर्थन और उपेक्षा का स्वरूप कैसे दिया जाये, संसार की घटनाएँ कैसे चुनी जायें और उनका विविध तेजस्वी रूपों में पृथक्करण कैसे हो, बड़ी-बड़ी बातों को छोटा स्वरूप कैसे दिया जाये, और कोई भी बात समझ लेने के पश्चात् समाचार-पत्रों में कैसे दी जाये, आलोचनाएँ कैसे की जायें, आलोचनाओं के जवाब कैसे लिखे जायें, किन आलोचनाओं में विषय की मीमांसा करते हुए व्यक्ति की उपेक्षा की जाये और किन में नहीं - आदि बातों की शुद्ध और सप्रयोग शिक्षा देने की व्यवस्था होनी चाहिए। इसी संस्था द्वारा प्रयोग के लिए एक साप्ताहिक पत्र और एक मासिक पत्र भी प्रकाशित किया जाये। इस संस्था से उत्तीर्ण होने के पश्चात् विद्यार्थियों को, देश के कुछ प्रसिद्ध और उत्तम समाचार-पत्रों के कार्यालयों में, कुछ मनस्वी सम्पादकों के पास, प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए रखा जाये। इस तरह अँगरेजी पढ़ने-लिखने और समझने का निश्चित ज्ञान पा चुकने वाले तरुण, चार-पाँच वर्षों में सम्पादकों के काम की चीज हो सकेंगे और रिपोर्ट, प्रूफ, भेंट तथा अन्य भिन्न-भिन्न सम्पादन के कार्यों से गुजर कर, उनमें से कुछ व्यक्ति, यदि उनमें स्वभाव-सिद्ध लगन हुई तो, देशों के अच्छे पत्रकार हों सकेंगे। इसके बाद भी अधिक महत्व का कार्य तब हो, जब हम विशेष होनहार तरुणों को, इस कला का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेशों में भिजवा सकें। पिछड़े हुए देश अफगानिस्तान, टर्की और चीन के सैकड़ों तरुण महान् यूरोपीय ज्ञान-क्षेत्रों में हैं, तब क्या हमारे देश में सम्पादन-कला के कुछ तरुण भी न हों? अस्तु, ऐसी विद्यापीठ में एक भाग सम्पादन-कला की तालीम देने वाला तथा दूसरा भाग व्यवस्थापक तैयार करने वाला होना चाहिए। छापेखानों का आर्थिक और व्यवसाय की दृष्टि से संचालन हमारे पत्रों की एक भारी जरूरत है। उत्तम व्यवस्थापक के अभाव में उत्तम सम्पादक अकेला कुछ अधिक नहीं कर सकता, श्रम विभाग होना चाहिए। राजा के मंत्री की तरह सम्पादक को व्यवस्थापक की जरूरत है। कई होनहार पत्रों के डूबने के प्रधान कारणों में एक कारण था, उत्तम व्यवस्थापक की कमी। अस्तु, सज्जनों, ऐसी विद्यापीठ की स्थापना की ओर मुझे आशा है, आपका ध्यान गये बिना न रहेगा। किंतु 'भूखे भजन न होय गुपाला' - ऐसे विद्यापीठ का निर्माण पत्रों के मुद्रण-व्यवसायियों द्वारा नहीं, स्वर्ण-मुद्राओं द्वारा ही हो सकता है। हिन्दी-भाषी जनता का जितना विस्तृत क्षेत्र उसमें कितने ही धनी-मानी और राजा-महाराज पड़े हुए हैं। यदि वे मैसूर, त्रावणकोर और बड़ौदा के रुख से हिन्दी-जगत् की इस कमी को देखें, तो इस विद्यापीठ के कायम होने में देर नहीं लग सकती। हम तो हिन्दू युनिवर्सिटी को अन्य सरकारी युनिवर्सिटियों की तरह गिने-चुने विषयों विषयों की तालीम देते ही नहीं देखना चाहते - हम चाहते हैं कि उसके संचालक, अपने पाठ्यक्रम में सम्पादन-कला को भी स्थान दें। मेरा विश्वास है, आपके प्रयत्नों का रुख इस काल की तालीम की इन दिशाओं में अवश्य मुड़ेगा। यदि कुछ धनिक सज्जन एक-एक विद्यार्थी को अपनी सहयता से विदेशों में सम्पादन-कला का अभ्यास करने भिजवायेंगे तो वे देश के भावी लोकमत को जाग्रत करने की दिशा में एक अच्छी सेवा करेंगे।

भरतपुर सम्पादक सम्मेलन-1927 के
अध्यक्षीय अभिभाषण के अंश